उ. प्र. लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षाओं हेतु

जी.आई.सी./ आश्रम पद्धति/डायट परीक्षा प्रश्न-पत्र

(GIC/Ashram Padhati/DIET Exam. Question Paper)

हिन्दी
सॉल्वड पेपर्स
एवं
प्रैक्टिस बुक

व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र

प्रधान सम्पादक

Anand K. Mahajan

सम्पादन एवं संकलन

परीक्षा विशेषज्ञ समिति

कम्प्यूटर ग्राफिक्स

बालकृष्ण, चरन सिंह

सम्पादकीय कार्यालय

12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002

9415650134

Email : yctap12@gmail.com

website : www.yctbooks.com/www.yctfastbook.com/www.yctbooksprime.com

© All Rights Reserved with Publisher

प्रकाशन घोषणा

प्रधान सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने Printed by Digital से मुद्रित करवाकर, वाई.सी.टी. पब्लिकेशन प्रा. लि., 12, चर्च लेन, प्रयागराज के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सुझाव एवं सहयोग सादर अपेक्षित है।

₹ : 495/-

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

विषय-सूची

- उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग GIC प्रवक्ता परीक्षा योजना एवं पाठ्यक्रम 3

सॉल्व्ड पेपर्स

- जी.आई.सी. प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2021 व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र 4-19
- जी.आई.सी. प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2017 व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र 20-35
- जी.आई.सी. प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2015 व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र 36-51
- जी.आई.सी. प्रवक्ता (शिक्षा विभाग) भर्ती परीक्षा, 2015 व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र 52-64
- जी.आई.सी. प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2012 व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र 65-79
- डायट प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2014 व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र 80-89
- आश्रम पद्धति प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2012 व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र 90-102
- आश्रम पद्धति प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2009 व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र 103-117

प्रैक्टिस सेट

- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-1 118-124
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-1 : व्याख्या सहित हल 125-132
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-2 133-138
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-2 : व्याख्या सहित हल 139-146
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-3 147-153
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-3 : व्याख्या सहित हल 154-161
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-4 162-168
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-4 : व्याख्या सहित हल 169-175
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-5 176-182
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-5 : व्याख्या सहित हल 183-189
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-6 190-196
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-6 : व्याख्या सहित हल 197-204
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-7 205-210
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-7 : व्याख्या सहित हल 211-218
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-8 219-224
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-8 : व्याख्या सहित हल 225-231
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-9 232-237
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-9 : व्याख्या सहित हल 238-244
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-10 245-250
- जी.आई.सी. प्रवक्ता प्रैक्टिस सेट-10 : व्याख्या सहित हल 251-256

राजकीय इण्टर कॉलेज (GIC) प्रवक्ता परीक्षा : पाठ्यक्रम

प्रारम्भिक परीक्षा हेतु परीक्षा योजना एवं पाठ्यक्रम

प्रारम्भिक परीक्षा में सामान्य अध्ययन/वैकल्पिक विषय का एक प्रश्नपत्र होगा जो वस्तुनिष्ठ व बहुविकल्पी प्रकार का होगा। इसमें प्रश्नों की संख्या 120 (वैकल्पिक विषय के 80 प्रश्न तथा सामान्य अध्ययन के 40 प्रश्न) होगा जो कुल 300 अंकों का तथा समय 2 घंटों का होगा।

सामान्य अध्ययन

1. सामान्य विज्ञान
2. भारत का इतिहास
3. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन
4. भारतीय राजतंत्र, अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति
5. भारतीय कृषि, वाणिज्य एवं व्यापार
6. विश्व भूगोल तथा भारत का भूगोल एवं प्राकृतिक संसाधन
7. अधुनातन राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्वपूर्ण घटनाक्रम
8. सामान्य बौद्धिक एवं तार्किक क्षमता
9. उत्तर प्रदेश की शिक्षा, संस्कृति, कृषि, उद्योग, व्यापार एवं रहन-सहन और सामाजिक प्रथाओं के संबंध में विशिष्ट जानकारी
10. प्रारम्भिक गणित (आठवीं स्तर तक) – अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित
11. पारिस्थितिकी तथा पर्यावरण

वैकल्पिक विषय : हिन्दी

- **हिन्दी साहित्य का इतिहास–**हिन्दी-साहित्य के इतिहास-लेखन की परम्परा, हिन्दी-साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन। आदिकाल– नामकरण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ। भक्तिकाल– सामान्य विशेषताएँ, भक्तिकाल की धाराएँ– ज्ञानाश्रयी काव्यधारा, प्रेमाश्रयी (सूफी) काव्यधारा, कृष्णभक्ति काव्यधारा, रामभक्ति काव्यधारा, चारों काव्यधाराओं की प्रमुख प्रवृत्तियाँ। रीतिकाल–नामकरण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ। आधुनिक काल– भारतेन्दुयुग, द्विवेदीयुग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, प्रपद्यवाद, नवगीत। विभिन्न कालों के प्रमुख कवि एवं उनकी प्रमुख रचनाएँ। प्रसिद्ध काव्य– पंक्तियों एवं सूक्तियों के लेखकों/कवियों के नाम।
- **गद्य-साहित्य का उद्भव और विकास–**निबन्ध, उपन्यास, कहानी, नाटक, आलोचना। गद्य की अन्य नवीन विधाएँ–जीवनी–साहित्य, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, यात्रा-साहित्य, डायरी-साहित्य, व्यंग्य, इण्टरव्यू, बाल-साहित्य, स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श। युगप्रवर्त्तक लेखकों के नाम तथा उनकी प्रमुख रचनाएँ।
- **पत्रकारिता–**प्रमुख हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ, प्रकाशन-स्थान, प्रकाशन-वर्ष तथा उनके प्रमुख सम्पादकों के नाम।
- **काव्यशास्त्र–**भारतीय काव्यशास्त्र-काव्यलक्षण, भेद। रस, छंद, अलंकार, काव्य-सम्प्रदाय, काव्ययुग, काव्यदोष, शब्दशक्तियाँ।
- **भाषाविज्ञान–**हिन्दी की उपभाषाएँ, विभाषाएँ, बोलियाँ, हिन्दी की ध्वनियाँ, हिन्दी शब्द-सम्पदा।
- **हिन्दी-व्याकरण–**संधि, समास, कारक, लिंग, वचन, काल, पर्यायवाची, विलोम शब्द, वर्तनी-सम्बन्धी अशुद्धिशोधन, वाक्य-संबंधी अशुद्धिशोधन, वाक्यांश के लिए एक शब्द, अनेकार्थी शब्द, समोच्चरित-प्राय भिन्नार्थक शब्द, विरामचिह्न, मुहावरा और लोकोक्ति। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण। उपसर्ग, प्रत्यय।
- **संस्कृत–**साहित्य के प्रमुख रचनाकारों के नाम एवं उनकी प्रमुख कृतियाँः कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ, भास, बाण, श्री हर्ष, दण्डी, मम्मट, भरतमुनि, विश्वनाथ, राजशेखर तथा जयदेव।
- **संस्कृत व्याकरण–**संधि- स्वर संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि। समास, उपसर्ग, प्रत्यय। विभक्ति–चिन्ह (परसर्ग)– प्रयोग एवं पहचान। शब्दरूप– आत्मन्, नामन्, जगत्, सरित्, बालक, हरि, सर्व, इदम् अस्मद्, युष्मद्।
- **धातुरूप–**स्था, पा, गम्, पठ्, हस्, धातु– केवल परस्मैपदी रूप में। काल। हिन्दी– वाक्यों का संस्कृत अनुवाद।

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग जी.आई.सी. प्रवक्ता परीक्षा, 2021
हिन्दी

(हल प्रश्न पत्र)
(अध्यायवार विश्लेषण सहित व्याख्या)

[परीक्षा तिथि : 19.9.2021

1. जीवनी–साहित्य से संबंधित कृति 'आवारा मसीहा' इनमें से किस रचनाकार के जीवन पर आधारित है?

(a) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
(b) राहुल सांकृत्यायन
(c) शरतचन्द्र चटर्जी
(d) बंकिमचन्द्र

Ans. (c) : जीवनी-साहित्य से सम्बन्धित कृति 'आवारा मसीहा' शरतचन्द्र चटर्जी के जीवन पर आधारित है। विष्णु प्रभाकर कृत 'आवारा मसीहा' जीवनी में प्रसिद्ध बांग्ला साहित्यकार शरतचंद्र चटर्जी (शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय) का वर्णन है। सन् 1974 ई. में लिखित यह जीवनी दिशाहारा, दिशा की खोज एवं दिशांत नामक तीन भागों में विभक्त है। हिन्दी की प्रथम जीवनी 'दयानन्द दिग्विजय' (1881 ई.) के लेखक गोपाल शर्मा शास्त्री हैं।

2. निम्नलिखित में से किस साहित्यकार ने 'कुट्टिचातन' नाम से भी कुछ निबंध लिखे हैं?

(a) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(b) डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल
(c) जैनेन्द्र कुमार
(d) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

Ans. (d) : सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने 'कुट्टिचातन' नाम से भी कुछ निबंध लिखे हैं। विश्वनाथ तिवारी अज्ञेय को 'चिंतक रचनाकार मानते हैं तो कृष्ण बलदेव वैद "खूबसूरत नकाबपोश" मानते हैं। उनके अन्य उपनाम है – श्री वत्स, गजानन पंडित, डॉ. अबुल लतीफ, समाजद्रोही नं. 1।

अज्ञेय के निबन्ध संग्रह– त्रिशंकु (1945), सब रंग और कुछ राग (1969 ई.), आत्मनेपद (1960), आलवाल (1971), लिखी कागद कोरे (1972), अद्यतन (1977), जोग लिखी (1977), स्रोत और सेतु (1978), युग संधियों पर (1981), धार और किनारे (1982), कहाँ है द्वारका (1982), केन्द्र और परिधि (1984)।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबन्ध संग्रह– अशोक के फूल (1948), मध्यकालीन धर्म साधना (1952), विचार और वितर्क (1957), विचार प्रवाह (1959), कुटज (1964), साहित्य सहचर (1965), आलोक पर्व (1972), कल्पलता (1951)।

जैनेन्द्र के निबन्ध संग्रह– प्रस्तुत प्रश्न (1936), जड़ की बात (1945), पूर्वोदय (1951), साहित्य का श्रेय और प्रेय (1953), मंथन (1953), सोच विचार (1953), काम प्रेम और परिवार (1953), इतस्ततः (1963), समय और हम (1964), परिप्रेक्ष्य (1977)।

3. निम्नलिखित उपन्यासों को उनके लेखकों के साथ सुमेल कीजिए एवं कूट से सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कीजिए–

उपन्यास	लेखक
(क) मैला आँचल	(अ) श्री नरेश मेहता
(ख) यह पथ बंधु था	(ब) शिव प्रसाद सिंह
(ग) गली आगे मुड़ती है	(स) विवेकी राय
(घ) लोकऋण	(द) फणीश्वरनाथ रेणु

कूट–

	क	ख	ग	घ
(a)	ब	स	अ	द
(b)	द	अ	ब	स
(c)	द	ब	अ	स
(d)	अ	द	स	ब

Ans. (b) : निम्नलिखित उपन्यासों एवं उनके लेखकों के साथ सुमेलन इस प्रकार है–

उपन्यास	प्रकाशनवर्ष	लेखक
मैला आँचल	1954	फणीश्वरनाथ रेणु
यह पथ बंधु था	1962	श्री नरेश मेहता
गली आगे मुड़ती है	1974	शिव प्रसाद सिंह
लोकऋण	1977	विवेकीराय

4. 'दुर्गा' एकांकी नाटक के रचनाकार हैं–

(a) जगदीशचन्द्र माथुर
(b) उपेन्द्रनाथ अश्क
(c) उदयशंकर भट्ट
(d) सेठ गोविन्ददास

Ans. (c) : 'दुर्गा' एकांकी नाटक के रचनाकार उदयशंकर भट्ट हैं। उदयशंकर भट्ट के अन्य एकांकी हैं- एक ही कब्र में, दस हजार, नेता, उन्नीस सौ पैंतीस, वर निर्वाचन, सेठ लाभचन्द, स्त्री का हृदय, बड़े आदमी की मृत्यु, नये मेहमान, पर्दे के पीछे, मुंशी अनोखे लाल, विष की पुड़िया, धूम शिखा।

जगदीश चन्द्र माथुर के एकांकी - मेरी बाँसुरी, भोर का तारा, कलिंग विजय, रीढ़ की हड्डी, मकड़ी का जाला, खण्डहर, खिड़की राह, घोंसले, कबूतरखाना, ओ मेरे सपने, शारदीय।

उपेन्द्रनाथ अश्क के एकांकी–

सामाजिक व्यंग्य–लक्ष्मी का स्वागत, पापी, मोहब्बत, जोंक, स्वर्ग की झलक।

प्रतीकात्मक एकांकी– चरवाहे, देवताओं की छाया में, खिड़की, अंधी गली।

प्रहसन- पर्दा उठाओ, पर्दा गिराओ, कइसा साब कइसी आया।

सेठ गोविन्द दास- स्पर्धा, मानव मन, मैत्री, वह मरा क्यों, हंगर स्ट्राइक, बुद्ध की एक शिष्या, सप्त रश्मि, एकादशी, पंचभूत, चतुष्पथ, आपबीती-जगबीती।

5. 'लक्ष्मीपुरा' इनमें से किस विधा की रचना है?

(a) रिपोर्ताज
(b) संस्मरण
(c) व्यंग्य
(d) रेखाचित्र

Ans. (a) : किसी लेखक द्वारा किसी भी आयोजन, घटना, संस्था आदि का कलात्मक ढंग से विवरण रिपोर्ट तैयार करके प्रस्तुतीकरण करना, रिपोर्ताज कहलाता है।'' 'लक्ष्मीपुरा' रिपोर्ताज विधा की रचना है। 'रिपोर्ताज' फ्रांसीसी भाषा का शब्द है। गद्य विधा के रूप में इसका आविर्भाव द्वितीय विश्वयुद्ध के आस-पास हुआ। रिपोर्ताज जनक के रूप में रूसी साहित्यकार इलिया एहरेनवर्ग को स्वीकार किया जाता है। हिन्दी में रिपोर्ताज का जनक शिवदान सिंह चौहान को माना जाता है। 'रुपाभ' पत्रिका के दिसम्बर, 1938 ई0 में प्रकाशित 'लक्ष्मीपुरा' को हिन्दी का प्रथम रिपोर्ताज माना जाता है। शिवदान सिंह चौहान के रिपोर्ताज हैं- लक्ष्मीपुरा, मौत के खिलाफ जिंदगी की लड़ाई।

संस्मरण : स्मृति के आधार पर किसी विषय या व्यक्ति के संबंध में लिखित ग्रंथ या लेख 'संस्मरण' कहलाता है। बालमुकुंद गुप्त का 1907 में 'प्रताप नारायण मिश्र पर लिखा संस्मरण हिंदी का प्रथम संस्मरण माना जाता है।

6. इनमें से महाकवि कालिदास के जीवन पर आधारित मोहन राकेश की नाट्यकृति है–

(a) लहरों के राजहंस
(b) आषाढ़ का एक दिन
(c) आधे-अधूरे
(d) इनमें से कोई नहीं

Ans. (b) : महाकवि कालिदास के जीवन पर आधारित मोहन राकेश की नाट्यकृति 'आषाढ़ का एक दिन' है। 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के पुरुष पात्र - कालिदास, विलोम मातुल, दंतुल। स्त्रीपात्र– अम्बिका, मल्लिका, प्रियगुमंजरी, रंगिणी, संगिणी।

आधुनिक काल के सशक्त नाटककारों में मोहन राकेश शीर्ष पर हैं। उनके दो अन्य नाटक–

'लहरों के राजहंस' (1963) में 'नंद' और 'सुन्दरी' की कथा महात्मा बुद्ध के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत की गई हैं। 'आधे-अधूरे' (1969) नाटक मध्यवर्गीय जीवन की विडम्बना को प्रस्तुत करने वाला एक सशक्त नाटक है इसके प्रमुख पुरुष पात्र– महेन्द्रनाथ, सिंघानिया, अशोक, जगमोहन। स्त्री पात्र– सावित्री, बिन्नी, किन्नी, जुनेजा हैं।

7. 'कहि न जाय का कहिए' – आत्मकथा के लेखक हैं–

(a) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
(b) राम विलाश शर्मा
(c) भगवतीचरण वर्मा
(d) विष्णु प्रभाकर

Ans. (c) : 'कहि न जाय का कहिए' – आत्मकथा के लेखक भगवतीचरण वर्मा हैं।

'तपती पगडंडियों पर पदयात्रा' (1989) – आत्मकथा के लेखक– कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' हैं।

मुँडेर पर सूरज (प्रथम खण्ड), देर सबेर (द्वितीय खण्ड)

आपस की बातें (तृतीय खण्ड)–आत्मकथा के लेखक रामविलास शर्मा हैं।

पंखहीन (प्रथम खण्ड–2004), मुक्त गगन में (द्वितीय खण्ड-2004), पंछी उड़ गया (तृतीय खण्ड 2004) आत्मकथा के लेखक विष्णु प्रभाकर हैं।

8. निम्नलिखित में से राजेन्द्र यादव की संस्मरण–कृति है–

(a) जिनके साथ जिया
(b) युगपुरुष
(c) यादों की तीर्थयात्रा
(d) औरों के बहाने

Ans. (d) :

संस्मरणकार	संस्मरण
राजेन्द्र यादव	'औरों के बहाने' (1981 ई.)
	'वे देवता नहीं हैं' (2000 ई.)
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	युगपुरुष (1983 ई.)
अमृतलाल नागर	जिनके साथ जिया (1981 ई.)
विष्णु प्रभाकर	जाने अनजाने (1962),
	यादों की तीर्थ यात्रा (1981 ई.)
	मेरे अग्रज मेरी मीत (1983 ई.)
	सृजन के सेतु (1990 ई.)

9. डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी के किस उपन्यास को 'रैक्व आख्यान' भी कहा जाता है?

(a) पुनर्नवा
(b) अनामदास का पोथा
(c) चारुचन्द्र लेख
(d) बाणभट्ट की आत्मकथा

Ans. (b) : डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी के 'अनामदास का पोथा' उपन्यास को 'रैक्व आख्यान' भी कहा जाता है। इसमें औपनिषदिक युग के परिवेश एवं जीवन पद्धति का चित्रण है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी-सामाजिक सांस्कृतिक धारा के उपन्यासकार हैं। इनका एक अन्य उपन्यास बाणभट्ट की आत्मकथा (1946) सर्वप्रथम 'विशाल भारत' पत्रिका में प्रकाशित हुआ, यह एक ऐतिहासिक हिन्दी उपन्यास है। इसमें तीन प्रमुख पात्र हैं– बाणभट्ट, भट्टिनी, निपुणिका। इसका विषय वस्तु प्रेम का उदात्तीकरण एवं हर्षकालीन सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का चित्रण है।

10. **रचना – विधा की दृष्टि से 'वोल्गा से गंगा' है–**

(a) कहानी

(b) नाटक

(c) उपन्यास

(d) यात्रावृत्तान्त

Ans. (a) : रचना-विधा की दृष्टि से 'वोल्गा से गंगा' 'कहानी' है। जिसके रचनाकार राहुल सांस्कृत्यायन हैं। इनकी एक अन्य कहानी- 'सतमी के बच्चे' (1935) है। 'वोल्गाा से गंगा' राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखी गई 20 कहानियों का संग्रह है। प्रथम 4 कहानियाँ (निशा, दिवा, अमृताश्व, पुरुहुत) मनुष्य के आदम जीवन से संबंधित है। अगली 4 कहानियों (पुरुधान, अंगिरा, सुदास, प्रवाहण) में वेद, पुराण, महाभारत, उपनिषदों को आधार बनाया गया है। राहुल सांकृत्यायन की प्रमुख कहानियाँ–सतमी के बच्चे, वोल्गा से गंगा, बहुरंगी मधुपुरी, कनैला की कथा आदि है।

11. **'छायावाद का व्यक्ति स्वातन्त्र्य सामन्ती मर्यादाओं के विरुद्ध बहुत बड़ा कदम था।' छायावाद संबंधी यह अभिमत–कथन इनमें से किस आलोचक का है?**

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(b) डॉ0 नंददुलारे बाजपेयी

(c) डॉ0 नामवर सिंह

(d) डॉ0 नगेन्द्र

Ans. (c) : 'छायावाद का व्यक्ति स्वातन्त्र्य सामन्ती मर्यादाओं के विरुद्ध बहुत बड़ा कदम था।' छायावाद संबंधी यह कथन डॉ0 नामवर सिंह का है।

डॉ0 नगेन्द्र– ''छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।''

डॉ0 नंददुलारे वाजपेयी– ''मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म, किन्तु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।

12. **'धर्मक्षेत्रे–कुरुक्षेत्रे' कहानी के लेखक है–**

(a) महीप सिंह

(b) कमलेश्वर

(c) हिमांशु जोशी

(d) दूधनाथ सिंह

Ans. (d) : धर्मक्षेत्रे-कुरुक्षेत्रे (2002) कहानी के लेखक दूधनाथ सिंह हैं। इनके अन्य कहानी संग्रह–सपाट चेहरे वाला आदमी (1967), सुखांत (1971), पहला कदम (1976), माई का शोक गीत (1992), नमो अंधकारम् (1998), निष्कासन (2002) है।

कमलेश्वर के कहानी संग्रह– राजा निरबंसिया (1957), कस्बे का आदमी (1958), खोई हुई दिशाएँ (1963), मांस का दरिया (1966), आजादी मुबारक (2002)।

महीप सिंह के कहानी संग्रह– सुबह के फूल (1959), उजाले के उल्लू (1964), घिराव (1968), कुछ और कितना (1973), दिल्ली कहाँ है (1985)

हिमांशु जोशी के कहानी संग्रह– अन्ततः (1965), रथचक्र (1975), मनुष्य चिह्न (1976), जलते हुए डैने (1980), सागर तट के शहर (2005)।

13. **दलित-विमर्श से सम्बन्धित निम्नलिखित कृतियों को उनके रचनाकारों से सुमेल करके सही उत्तर के विकल्प का चयन कीजिए–**

कृतियाँ	**रचनाकार**
(क) 'संतप्त'	(अ) मोहनदास नैमिशराय
(ख) 'मणिकर्णिका'	(ब) ओमप्रकाश वाल्मीकि
(ग) 'जूठन'	(स) तुलसीराम
(घ) 'अपने–अपने पिंजरे'	(द) सूरजपाल चौहान

कूट–

	क	**ख**	**ग**	**घ**
(a)	अ	द	ब	स
(b)	द	स	ब	अ
(c)	ब	स	अ	द
(d)	द	ब	स	अ

Ans. (b) : दलित-विमर्श से सम्बन्धित कृतियों एवं उनके रचनाकारों का सही सुमेलन निम्नलिखित है–

कृतियाँ	**रचनाकार**
संतप्त (2002)	सूरजपाल सिंह चौहान
मणिकर्णिका (2013)	तुलसीराम
जूठन (1997)	ओम प्रकाश वाल्मीकि
अपने-अपने पिंजरे (1995, 2001)	मोहनदास नैमिशराय

14. **निम्नलिखित में से लेखक और यात्रा साहित्य से संबंधित उनकी कृति का एक युग्म गलत है, वह है–**

(a) निर्मल वर्मा – 'चीड़ों पर चाँदनी'

(b) अज्ञेय – 'एक बूँद सहसा उछली'

(c) धर्मवीर भारती – 'किन्नर देश में'

(d) रामचन्द्र शुक्ल – 'चिन्तामणि'

Ans. (c) : लेखक और यात्रा साहित्य से सम्बन्धित उनकी कृति का एक युग्म गलत है, वह है– धर्मवीर भारती–'किन्नर देश में'। 'किन्नर देश में' (1948) यात्रावृत्त के लेखक– राहुल सांस्कृत्यायन हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'चिन्तामणि' (भाग एक) में लिखा है– ''इस पुस्तक में मेरी अन्तर्यात्रा में पड़ने वाले कुछ प्रदेश हैं। यात्रा के लिए निकलती रही है बुद्धि, पर हृदय को भी साथ लेकर अपना रास्ता निकालती रही है।''

15. **इनमें से रेखाचित्रपरक कौन सी कृति महादेवी वर्मा की नहीं है?**

(a) बोलती प्रतिमा

(b) अतीत के चलचित्र

(c) स्मृति की रेखाएं

(d) मेरा परिवार

Ans. (a) : इनमें से 'बोलती प्रतिमा' रेखाचित्रपरक कृति महादेवी वर्मा की नहीं है। 'बोलती प्रतिमा' (1937) रेखाचित्र के लेखक श्रीराम शर्मा है। शेष विकल्प अतीत के चलचित्र (1941), स्मृति की रेखाएँ (1943), मेरा परिवार (1972) रेखाचित्र की लेखिका महादेवी वर्मा हैं।

16. निम्नलिखित में से उपन्यास और उसमें वर्णित समस्या का एक युग्म सुमेलित नहीं है, वह है–

(a) कर्मभूमि – अछूतोद्धार की समस्या

(b) कायाकल्प – पारलौकिक समस्या

(c) सेवासदन – वेश्याओं की समस्या

(d) गबन – दहेज और अनमेल–विवाह की समस्या

Ans. (d) : उपन्यास और उसमें वर्णित समस्या का एक युग्म सुमेलित नहीं है, वह है– गबन – दहेज और अनमेल विवाह की समस्या। 'उपन्यास और उसमें वर्णित समस्या का सही सुमेलन निम्नलिखित है–

उपन्यास	प्रकाशन वर्ष	विषय/समस्या	प्रमुख पात्र
सेवासदन	1917	वेश्याओं की समस्या	सुमन, शांता
कायाकल्प	1928	पारलौकिक	चक्रधर, अहिल्या
गबन	1928	मध्यवर्गीय जीवन की असंगति का यथार्थवादी चित्रण	जालपा, रमानाथ
कर्मभूमि	1932	अछूतोद्वार की समस्या	अमरकांत, समरकांत, सकीना

17. 'विकलांग श्रद्धा का दौर' – इनमें से किस विधा की रचना है?

(a) रिपोर्ताज

(b) व्यंग्य

(c) कहानी

(d) डायरी

Ans. (b) : 'विकलांग श्रद्धा का दौर' इनमें से **'व्यंग्य'** विधा की रचना है। 'विकलांग श्रद्धा का दौर' (1980 ई.) व्यंग्यात्मक निबंध-हरिशंकर परसाई जी का है। इस रचना पर इन्हें 1982 ई0 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

हरिशंकर परसाई का व्यंग्यात्मक निबन्ध संग्रह–

पगडंडियों का जमाना (1966), जैसे उनके दिन फिरे (1963), सदाचार की ताबीज (1967), शिकायत मुझे भी है (1970), ठिठुरता हुआ गणतंत्र (1970), अपनी-अपनी बीमारी (1972), वैष्णवन की फिसलन (1967), विकलांग श्रद्धा का दौर (1980), भूत के पाँव पीछे, सुनो भाई साधो (1983), तुलसीदास चंदन घिसे (1986), कहत कबीर (1987), हँसते हैं रोते हैं, तब की बात और थी, पाखण्ड का अध्यात्म (1998), आवारा भीड़ के खतरे (1998), प्रेमचंद के फटे जूते।

18. श्रीलाल शुक्ल के अति प्रसिद्ध उपन्यास 'राग दरबारी' में किस गाँव का चित्रण है?

(a) मीरगंज (b) मेरीगंज

(c) शिवपाल गंज (d) गंगौली

Ans. (c) : श्रीलाल शुक्ल के अति प्रसिद्ध उपन्यास 'राग दरबारी' में शिवपालगंज गाँव का चित्रण है।

– फणीश्वरनाथ 'रेणु' के आंचलिक उपन्यास–'मैला आँचल' (1954) में –पूर्णिया जिले के 'मेरीगंज' गाँव की कथा है।

– राही मासूम रजा के उपन्यास - 'आधा गाँव' (1966) में – गाजीपुर जिले के 'गंगोली गाँव' के सैयद मुसलमानों की कथा है।

19. 'यह प्रेम को पंथ कराल महा तरवारि की धार पै धावनो है।' यह काव्य पंक्ति है–

(a) घनानन्द की (b) आलम की

(c) ठाकुर की (d) बोधा की

Ans. (d) : 'यह प्रेम को पंथ कराल महा तरवारि की धार पै धावनो है।' यह काव्य पंक्ति बोधा की है।

रीतिकालीन रीतिमुक्त कवि की काव्य पंक्तियाँ निम्नवत् है–

– ''यों घन आनन्द छावत भावत, जान सजीवन ओर ते आवत।
लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोहि तो मेरे कवित्त बनावत।।

–घनानन्द की

– ''प्रेम रंग-पगे जगमगे जग जामिनी के।
जोबन की जोति जगी जोर उमगत है।।''

–आलम की

– ''सेवक सिपाही हम उन राजपूतन को।
दान जुद्ध जुरिबे में नेकु जे न मुरको।।''

–ठाकुर की

20. महादेवी वर्मा के किस काव्यसंग्रह की कविताएँ वैदिक संस्कृत के विभिन्न काव्यांशों पर आधृत हैं?

(a) सप्तपर्णा (b) दीपशिखा

(c) नीरजा (d) सान्ध्यगीत

Ans. (a) : महादेवी वर्मा के 'सप्तपर्णा' काव्य संग्रह की कविताएँ वैदिक संस्कृत के विभिन्न काव्यांशों पर आधृत है।

'सप्तपर्णा' में महादेवी ने अपनी सांस्कृतिक चेतना के सहारे वेद, रामायण, अश्वघोष, कालिदास, भवभूति एवं जयदेव की कृतियों से तादात्म्य स्थापित करके 39 चयनित महत्वपूर्ण अंशो का हिन्दी काव्यानुवाद प्रस्तुत किया।

महादेवी वर्मा की अन्य प्रमुख काव्य कृतियाँ–
नीहार (1930 ई.), रश्मि (1932 ई.), नीरजा (1935 ई.), सांध्यगीत (1936 ई.), यामा (1940 ई.), दीपशिखा (1942 ई.), सप्तपर्णा (1960 ई.)।

महादेवी वर्मा कृत 'सप्तपर्णा' में ऋग्वेद के मंत्रों का हिन्दी काव्यानुवाद संकलित है। महादेवी वर्मा कृत 'यामा' में उनके नीहार, रश्मि नीरजा और सांध्यगीत के महत्वपूर्ण गीतों का संकलन किया गया है। 'यामा' काव्य संग्रह पर महादेवी वर्मा को 1982 ई0 का 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

21. 'अमिय, हलाहल मद भरे, सेत, स्याम, रतनार। जियत, मरत, झुकि – झुकि परत, जेहि चितवत इक बार॥' – कवि 'रसलीन' द्वारा रचित यह दोहा उनकी किस कृति में संगृहीत है?

(a) रस प्रबोध
(b) अंग दर्पण
(c) रस प्रबोध और अंग दर्पण – दोनों में
(d) इनमें से किसी में नहीं

Ans. (b) : 'अमिय, छलाहल मद भरे, सेत स्याम रतनार।
जियत, मरत, झुकि झुकि परत, जेहि चितवत इक बार।।'
कवि 'रसलीन' द्वारा रचित यह दोहा उनकी 'अंग दर्पण' कृति में संगृहीत है। रसलीन का मूल नाम–गुलाम नबी था। ये मीर तु फैल अहमद के शिष्य थे।
रसलीन की प्रमुख कृतियाँ निम्न है–

ग्रंथ	**वर्ष**	**विषय निरूपण**
अंग दर्पण	1737	अंगो का उपमा, उत्प्रेक्षा से चमत्कारपूर्ण वर्णन
रस प्रबोध	1741	1155 दोहे में रसों का वर्णन

22. मिश्र बंधुओं की पुस्तक 'हिन्दी नवरत्न' में इनमें से किस कवि को स्थान नहीं मिला?

(a) मतिराम (b) देव
(c) जायसी (d) सूर

Ans. (c) : मिश्र बन्धुओं की पुस्तक 'हिन्दी नवरत्न' में कवि 'जायसी' को स्थान नहीं मिला।
मिश्र बंधुओं का 'हिंदी नवरत्न' एक लम्बी भूमिका और नौ अध्यायों में विभाजित है, जिनमें मध्यकाल से लेकर आधुनिक काल तक के एक-एक कवि को रखा गया है जिनका क्रम इस प्रकार है–
1. गोस्वामी तुलसीदास, 2. महात्मा सूरदास, 3. महाकवि देवदत्त, 4. महाकवि बिहारीलाल, 5. त्रिपाठी बंधु (महाकवि भूषण, मतिराम), 6. केशवदास, 7. कबीर, 8. चंदबरदाई, 9. भारतेन्दु हरिश्चंद्र।
इसी क्रम के आधार पर मिश्रबंधुओं ने कवियों की तीन त्रयी बनायी–
मिश्रबंधओं की वृहदत्रयी : तुलसीदास, सूरदास, देव
मिश्रबंधुओं की मध्यत्रयी : बिहारी, भूषण, केशव
मिश्रबंधुओं की लघुत्रयी : मतिराम, चंदबरदाई, हरिश्चंद्र
''नवरत्न'' नाम की सार्थकता बनाये रखने के लिये मिश्र बंधुओं ने 'भूषण' और मतिराम को 'त्रिपाठी बंधु' कहकर एक ही मान लिया।

23. नवगीत विधा से संबंधित काव्यकृति 'दर्द जहां नीला है' के रचनाकार हैं–

(a) वीरेन्द्र मिश्र
(b) कुँवर बेचैन
(c) रवीन्द्र भ्रमर
(d) शंभुनाथ सिंह

Ans. (d) : नवगीत विधा से संबंधित काव्यकृति 'दर्द जहाँ नीला है' के रचनाकार – शंभुनाथ सिंह हैं।
डॉ. शम्भुनाथ सिंह के अन्य नवगीत-संकलन–
रूप रश्मि, छायालोक, मन्वन्तर, उदयाचल (1946), दिवालोक (1951), समय की शिला पर (1968)।
– हिन्दी में 'नवगीत' परम्परा का आरम्भ राजेन्द्र प्रसाद सिंह द्वारा सन् 1958 में सम्पादित 'गीतांगिनी' शीर्षक नवगीत संकलन से माना जाता है।
वीरेन्द्र मिश्र के नवगीत संकलन– गीतम, लेखनी-बेला, अविराम चल मधुवन्ति।
कुँवर बेचैन के नवगीत संकलन– पिन बहुत सारे (1972), शामियाने काँच के (1983), महावर इन्तजारों का (1983)।
रवीन्द्र भ्रमर के नवगीत संकलन– रवीन्द्र भ्रमर के गीत (1963), सोन मछरी मन बसी।

24. ''प्रयोगवाद हिन्दी में बैठे–ठाले का धंधा बनकर आया था। प्रयोक्ताओं के पास न तो काव्य–संबंधी कोई कौशल था और न किसी प्रकार की कथनीय वस्तु थी।'' – यह कथन इनमें से किसका है?

(a) डॉ0 नन्ददुलारे वाजपेयी
(b) डॉ0 नगेन्द्र
(c) डॉ0 रामविलास शर्मा
(d) डॉ0 जगदीश गुप्त

Ans. (a) : प्रयोगवाद हिन्दी में बैठे-ठाले का धंधा बनकर आया था। प्रयोक्ताओं के पास न तो काव्य–संबंधी कोई कौशल था और न किसी प्रकार की कथनीय वस्तु थी।''–यह कथन डॉ0 नन्ददुलारे वाजपेयी का है।
डॉ0 नगेन्द्र ने– ''प्रयोगवाद को शैलीगत विद्रोह'' कहा है।
डॉ0 रामविलास शर्मा ने लिखा– ''प्रयोगवादी कविता में युग से उत्पन्न अनास्था, शंका, घुटन, कुण्ठा, भग्नाशा में से एक पथ के अन्वेषण की व्याकुल भावना दिखाई पड़ती है। ये कवि एक नये मार्ग का अनुसंधान करने के लिए व्याकुल हैं।''

25. 'कृषक – क्रन्दन' इनमें से किसकी काव्यकृति है?

(a) रामनरेश त्रिपाठी
(b) रामकुमार वर्मा
(c) गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'
(d) मैथिलीशरण गुप्त

Ans. (c) : 'कृषक-क्रंदन' गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' की काव्यकृति है।

गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' की अन्य काव्य कृतियाँ–

प्रेम पचीसी (लगभग 1905 ई.), कुसुमांजलि (1915 ई.), कृषक क्रन्दन (1916), राष्ट्रीय वीणा, त्रिशूल तरंग (1919 ई.), करुणा कादम्बिनी (1958)।

रामनरेश त्रिपाठी की काव्य कृतियाँ– मिलन (1917), पथिक (1920), मानसी (1927), स्वप्न (1929)

मैथिलीशरण गुप्त की काव्य कृतियाँ– रंग में भंग (1909), जयद्रथ वध (1910), भारत-भारती (1912), किसान (1917), विकट भट (1929), साकेत (1931), यशोधरा (1932), द्वापर (1936), जयभारत (1952), विष्णुप्रिया (1957)।

26. 'हिन्दी नई चाल में ढली' – भारतेन्दु जी की यह पंक्ति उनकी किस रचना से ली गयी है?

(a) भारत-दुर्दशा

(b) कालचक्र

(c) अन्धेर नगरी

(d) बादशाह – दर्पण

Ans. (b) : 'हिन्दी नई चाल में ढली' –भारतेन्दु जी की यह पंक्ति 1873 ई0 में प्रकाशित 'कालचक्र' रचना से ली गयी है। इन्होंने नारद भक्ति सूत्र का तदीय सर्वस्व एवं शांडिल्य भक्ति सूत्र का भक्ति सूत्र वैजयंती शीर्षक से अनुवाद किया।

इनके द्वारा रचित काव्य कृतियाँ– भक्ति सर्वस्व, प्रेम-मालिका कार्तिक स्नान, वैशाख माहात्म्य, प्रेम सरोवर, प्रेम माधुरी।

27. रामचन्द्र शुक्ल का साहित्येतिहास ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' नागरी प्रचारिणी सभा' से प्रकाशित 'हिन्दी शब्दसागर' की भूमिका में किस शीर्षक से लिखा गया था?

(a) हिन्दी साहित्य की भूमिका

(b) हिन्दी साहित्य की परम्परा

(c) हिन्दी साहित्य का अतीत

(d) हिन्दी साहित्य का विकास

Ans. (d) : रामचन्द्र शुक्ल का साहित्येतिहास ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' 'नागरी प्रचारिणी सभा' से प्रकाशित 'हिन्दी शब्दसागर' की भूमिका के रूप में 'हिन्दी साहित्य का विकास' शीर्षक से सन् 1929 ई0 में प्रकाशित हुआ।

**28. ''ढेल सो बनाय आय मेलत सभा के बीच,
लोगन कवित्त कीन्हों खेल करि जान्यो है।'' – ये काव्य–पंक्तियाँ किस कवि की हैं?**

(a) ठाकुर

(b) घनानन्द

(c) भिखारीदास

(d) देव

Ans. (a) : ''ढेल सो बनाय आय मेलत सभा के बीच, लोगन कवित्त कीन्हों खेल करि जान्यो है।'' ये काव्य पंक्तियाँ रीतिकालीन रीतिमुक्त कवि 'ठाकुर' की हैं। रामचंद्र शुक्ल ने ठाकुर को 'सच्ची उमंग' का कवि कहा है तो घनानंद को वे ''प्रेम की पीर का कवि'' मानते हैं। देव के संदर्भ में रामचंद्र शुक्ल का कहना है कि–''वे आचार्य और कवि दोनों रूपों में हमारे सामने आते हैं।'' भिखारीदास के संदर्भ में कहते हैं कि– ''इनकी रचना कलापक्ष में संयत और भावपक्ष में रंजनकारिणी हैं।'' प्रमुख पंक्ति एवं उनके रचनाकार हैं-

अति सुधौ सनेह को मारगु हैं।
जहँ नैकु सयानप बाँक नहीं।। **(घनानंद)**

अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।
अधम व्यंजना रस बिरस, उलटी कहत नवीन।। **–(देव)**

आगे के कवि रीझिहै, तो कविताई न तो।
राधा कन्हाई सुमिरन कौ बहानौ हैं।। **–(भिखारीदास)**

29. ''वे धर्म में विशिष्टाद्वैतवादी, विचारों में गाँधीवादी और साहित्य में अभिधावादी है।'' –यह कथन मैथिलीशरण गुप्त के विषय में किसने कहा है?

(a) डॉ0 गणपतिचन्द्र गुप्त

(b) डॉ0 हजारीप्रसाद द्विवेदी

(c) डॉ0 बच्चन सिंह

(d) डॉ0 रामचन्द्र शुक्ल

Ans. (c) : ''वे धर्म में विशिष्टाद्वैतवादी, विचारों में गाँधीवादी और साहित्य में अभिधावादी है।'' –यह कथन मैथिलीशरण गुप्त के विषय में डॉ0 बच्चन सिंह ने कहा है।

मैथिलीशरण गुप्त को हिंदी साहित्य जगत में ''दद्दा'' नाम से सम्बोधित किया जाता था। उनकी कृति 'भारत भारती' (1912) के बाद महात्मा गांधी ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' की पदवी भी दी।

मैथिलीशरण गुप्त ने 12 वर्ष की अवस्था में ब्रजभाषा में 'कनकलता' नाम से प्रथम कविता लिखी।

30. 'मदनाष्टक' इनमें से किसकी रचना है?

(a) नंददास

(b) गंग

(c) ध्रुवदास

(d) रहीम दास

Ans. (d) : 'मदनाष्टक' रहीमदास की रचना है।

'मदनाष्टक' संस्कृत और खड़ी बोली हिन्दी की मिश्रित शैली में रचित कृति है। इसका वर्ण्य-विषय 'भगवान श्री कृष्ण' की रासलीला है। इस कृति में 'मालिनी छंद' का प्रयोग किया गया है।

कवि गंग का वास्तविक नाम गंगाधर था। ये अकबर के दरबारी कवि थे। गंग पचीसी, गंग पदावली तथा गंगरत्नावली इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

रहीमदास की अन्य रचनाएँ– दोहावली या सतसई, बरवै नायिका भेद, नगर शोभा, मदनाष्टक, खेल कौतुकम्, शृंगार सोरठा, रास पंचाध्यायी।

नंददास की रचनाएँ– अनेकार्थ मंजरी, मानमंजरी, सुदामा चरित, रसमंजरी, रूपमंजरी, विरहमंजरी, प्रेमबारह खड़ी, श्यामसगाई, रुक्मिणी मंगल, भँवर गीत, रासपंचाध्यायी, सिद्धांत पंचाध्यायी, दशमस्कंध भाषा।

ध्रुवदास की रचनाएँ– जीवदशा लीला, मन शृंगारलीला, रसविहार लीला।

31. रीतिकालीन कवि 'मतिराम' द्वारा लिखित ग्रन्थ 'ललित ललाम' है –

(a) पिंगल–ग्रंथ
(b) रस–निरूपण ग्रंथ
(c) अलंकार–ग्रंथ
(d) इनमें से एक भी नहीं

Ans. (c) : रीतिकालीन कवि 'मतिराम' द्वारा लिखित ग्रंथ 'ललित ललाम' **अलंकार–ग्रंथ** है।

मतिराम के अन्य ग्रन्थ– फूल मंजरी, लक्षण शृंगार, साहित्य सार रसराज (रस निरूपक ग्रंथ), अलंकार पंचाशिका (अलंकार निरूपक ग्रंथ), सतसई, वृत्त कौमुदी।

32. निम्नलिखित में से कौन सा काव्य–संग्रह नागार्जुन का नहीं है?

(a) युग की गंगा
(b) युगधारा
(c) प्यासी–पथराई आँखें
(d) तुमने कहा था

Ans. (a) : 'युग की गंगा' काव्य-संग्रह नागार्जुन का नहीं है बल्कि यह रचना 'केदारनाथ अग्रवाल' की है।

केदारनाथ अग्रवाल की अन्य रचनाएँ– नींद के बादल (1947), लोक और आलोक (1957), फूल नहीं रंग बोलते हैं (1965), आग का आईना (1970), गुलमेंहदी (1978), पंख और पतवार (1979), बंबई का रक्त स्नान (1983), हे मेरी तुम (1981), मार प्यार की थापे (1981), बोले बोल अबोल (1985)।

नागार्जुन की प्रमुख रचनाएँ– युगधारा (1953), सतरंगे पंखों वाली (1959), प्यासी पथराई आँखें (1962), भस्मांकुर (1971), तालाब की मछलियाँ (1975), खिचड़ी विप्लव देखा हमने (1980), तुमने कहा था (1980), हजार-हजार बाँहो वाली (1981), पुरानी जूतियों का कोरस (1983), तालाब की मछलियाँ (1975)।

33. 'गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग' –ये काव्य–पंक्ति इनमें से किस कृति में है?

(a) बीजक
(b) गोरख बानी
(c) कवितावली
(d) नाथ बानी

Ans. (c) : ''गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग' –ये काव्य पंक्ति 'कवितावली' ग्रंथ से है इसके रचनाकार तुलसीदास हैं।

गोरखनाथ की रचनाओं का संकलन और संपादन डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने किया जो 'गोरखबानी' के नाम से प्रकाशित हुआ।

'बीजक' संत कबीर की वाणियों का संग्रह है जिसमें रमैनी, शब्द, ज्ञान चौतीसा, विप्रमलिसी, कहरा, बसंत, चाचर, बेलि, बिरहुली, हिण्डोला, साखी नामक 11 प्रकरण है।

तुलसीदास की कृतियाँ– वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न (ज्योतिष ग्रंथ), रामलला नहछू, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, कृष्ण गीतावली, गीतावली, विनय पत्रिका, दोहावली, बरवै रामायण, कवितावली।

34. 'सागर मुद्रा' इनमें से किसकी कृति है?

(a) शमशेर बहादुर सिंह
(b) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(c) कुँवर नारायण
(d) हरिनारायण व्यास

Ans. (b) : 'सागर मुद्रा' (1970) काव्य कृति सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' की है।

'अज्ञेय' के अन्य काव्य-संग्रह– भग्नदूत (1933), चिंता (1942), इत्यलम् (1946), हरी घास पर क्षण भर (1949), बावरा अहेरी (1954), इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये (1957), अरी ओ करुणा प्रभामय (1959), आँगन के पार द्वार (1961), पूर्वा, सुनहले शैवाल (1966), कितनी नावों में कितनी बार (1967), क्योंकि मैं उसे जानता हूँ (1969), सागरमुद्रा (1970), पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ (1973), नदी की बाँक छाया (1981)।

शमशेर बहादुर सिंह के काव्य-संग्रह– चुका भी हूँ नहीं मैं (1975), बात बोलेगी (1981), काल तुझसे होड़ है मेरी (1988), सुकून की तलाश (1998)।

कुँवर नारायण के काव्य संग्रह– चक्रव्यूह (1956), परिवेश : हम तुम (1961), अपने सामने (1979), कोई दूसरा नहीं (1993), इन दिनों (2002)

प्रबन्धकाव्य– आत्मजयी (1965), वाजश्रवा के बहाने (2008)।

हरिनारायण व्यास की प्रमुख रचनाएँ– मृग और तृष्णा, त्रिकोंण पर सूर्योदय, बरगद के चिकने पत्ते, आउटर पर रुकी ट्रेन।

35. हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'आदिकाल' के लिए 'आधारकाल' नाम दिया है–

(a) डॉ0 रामशंकर शुक्ल 'रसाल' ने
(b) डॉ0 श्यामसुन्दर दास ने
(c) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने
(d) डॉ0 मोहन अवस्थी ने

Ans. (d) : हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'आदिकाल' के लिए 'आधार काल' नाम डॉ0 मोहन अवस्थी ने दिया है इनके अतिरिक्त आदिकाल को 'आधार काल' नाम सुमनराजे ने भी दिया है।

आदिकाल का नामकरण

नाम	प्रयोक्ता
चारण काल	– जार्ज ग्रियर्सन
प्रारम्भिक काल	– मिश्र बन्धु
बीजवपन काल	– आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
वीरगाथा काल	– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
सिद्ध सामंत काल	– पं0 राहुल सांकृत्यायन
वीरकाल	– आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
संधिकाल एवं चारण काल	– डॉ0 रामकुमार वर्मा
आदिकाल	– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
आधार काल	– सुमनराजे और मोहन अवस्थी
जयकाल	– रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'।

36. रामकाव्य धारा से संबंधित कृति 'रामध्यानमंजरी' इनमें से किसकी है?

(a) प्राणचन्द चौहान की
(b) अग्रदास की
(c) हृदयराम की
(d) प्रियादास की

Ans. (b) : रामकाव्य धारा से संबंधित कृति 'रामध्यानमंजरी' अग्रदास की कृति है।
अग्रदास के अन्य प्रमुख ग्रंथ– हितोपदेश उपखाणा बावनी, ध्यान मंजरी, कुंडलिया, अष्टयाम या रामाष्टयाम।

प्रियादास	–	भक्तिरसबोधिनी (1769 संवत्)
प्राणचन्द्र	–	रामायण महानाटक (1610)
हृदयराम	–	हनुमन्नाटक (1623)

37. 'सार सुधानिधि' पत्र के संपादक थे–

(a) पं0 सदानंद मिश्र
(b) बख्तावर सिंह
(c) पं0 दुर्गाप्रसाद मिश्र
(d) रामदास सिंह

Ans. (a) : 'सार सुधानिधि' पत्र के संपादक **पं0 सदानन्द मिश्र** थे। 'सार सुधानिधि' पत्रिका का प्रकाशनारंभ वर्ष 1878 ई. है। यह पत्रिका 'कलकत्ता' से 'साप्ताहिक' रूप में निकलती थी।

→ 'उचित वक्ता' पत्रिका का संपादन पं0 दुर्गा प्रसाद मिश्र ने किया था। यह पत्रिका 1878 ई. में 'साप्ताहिक' रूप में 'कलकत्ता' से निकलती थी।

→ 'आर्य-दर्पण' पत्रिका का संपादन मुंशी बख्तावर सिंह ने किया था। यह पत्रिका 1877 ई0 में शाहजहाँपुर से प्रकाशित होती थी।

38. 'विशाल भारत' पत्र कहाँ से प्रकाशित हुआ था?

(a) दिल्ली
(b) जबलपुर
(c) कलकत्ता
(d) इलाहाबाद

Ans. (c) : 'विशाल भारत' पत्र **'कलकत्ता'** से प्रकाशित हुआ था। 'विशाल भारत' पत्र के प्रथम संपादक पं0 बनारसीदास चतुर्वेदी थे। विशाल भारत एक प्रसिद्ध हिन्दी पत्र था जिसका प्रकाशन सन् 1928 ई0 में कोलकाता से आरम्भ हुआ। इसके संस्थापक रामानन्द चट्टोपाध्याय थे। बनारसीदास जी सन् 1928 से 1937 ई0 तक इसका सम्पादन करते रहे।

39. बाबूराव विष्णु पराड़कर इनमें से किस दैनिक पत्र के संपादक रहे?

(a) दैनिक जागरण
(b) दैनिक आज
(c) अमर उजाला
(d) हिन्दुस्तान

Ans. (b) : बाबूराव विष्णुराव पराड़कर **'दैनिक आज'** पत्र के संपादक रहे। 'दैनिक आज' पत्र का प्रकाशन वर्ष 1920 ई0 है जो 'दैनिक' के रूप में 'वाराणसी' से निकाला जाता था।

→ 'हिन्दोस्थान' पत्र 'इंग्लैण्ड' से प्रकाशित होता था। इस पत्र को 1883 ई0 में राजा रामपाल सिंह ने सम्पादित किया, यह 'दैनिक' समाचार पत्र था।

→ दैनिक जागरण के प्रथम संस्करण का प्रकाशन सन् 1942 (भारत छोड़ो आंदोलन का समय) में झांसी से जारी किया गया। इसके संस्थापक स्वर्गीय पूर्णचंद्र गुप्त थे। 1947 में इसका मुख्यालय झांसी से कानपुर ले जाया गया।

→ 'अमर उजाला' का प्रकाशन सन् 1948 में डोरीलाल अग्रवाल तथा मुरारीलाल माहेश्वरी ने आगरा से प्रारंभ किया।

→ 'हिंदुस्तान' का प्रकाशन 12 अप्रैल, 1936 को दिल्ली से प्रारंभ हुआ।

40. राजा राममोहन राय का पत्र 'बंगदूत' सर्वप्रथम किस सन् में प्रकाशित हुआ?

(a) सन् 1828 ई.
(b) सन् 1832 ई.
(c) सन् 1827 ई.
(d) सन् 1829 ई.

Ans. (d) : राजा राममोहन राय का पत्र **'बंगदूत'** सर्वप्रथम 1829 ई0 में प्रकाशित हुआ। बंगदूत 1829 में प्रकाशित 'साप्ताहिक' (रविवारीय) पत्रिका थी जो 'कलकत्ता' से प्रकाशित होती थी। यह एक साथ चार भाषाओं– बांग्ला, हिन्दी, उर्दू में छपने वाली पत्रिका थी। इस पत्रिका का प्रकाशन राजा राममोहन राय ने 'बंगाल हेरल्ड' के साथ देशी भाषा में 9 मई, 1829 ई. को आरम्भ किया था।

41. 'तद्भव' पत्रिका के संपादक हैं–

(a) हरे प्रकाश उपाध्याय
(b) संजय सहाय
(c) अखिलेश
(d) ज्ञानरंजन

Ans. (c) : 'तद्भव' पत्रिका के संपादक **'अखिलेश'** हैं। समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य के एक प्रमुख हस्ताक्षर 'अखिलेश' ने इस पत्रिका का प्रकाशन मार्च, 1999 से प्रारंभ किया। इसका प्रकाशन लखनऊ, उत्तर-प्रदेश से होता है। यह एक 'त्रैमासिक' साहित्यिक पत्रिका है। यह पत्रिका हर बार आधुनिक रचनाशीलता पर केन्द्रित एक विशिष्ट संचयन होती है तथा विशुद्ध साहित्यिक सामग्रियों को प्रकाशन में महत्त्व देती है। 'पहल' पत्रिका का सम्पादन 'ज्ञानरंजन' करते थे। इस पत्रिका का प्रकाशनारंभ 1960 ई0 में 'जयपुर' से हुआ, यह त्रैमासिक पत्रिका थी।

42. 'मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढ़ितोऽथ प्रयोजनात् ।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया॥'
इस कथन के आचार्य हैं–

(a) कुन्तक
(b) आनन्दवर्धन
(c) विश्वनाथ
(d) मम्मट

Ans. (d) : 'मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात् ।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया।।''
यह कथन आचार्य मम्मट का है।

– मुख्यार्थ को बाधित करके अमुख्यार्थ को महत्त्व देने की क्रिया या तो लोक प्रचलित व्यवहार पर आधृत होती है अथवा प्रभावोत्पादन के प्रयोजन से प्रेरित होती है। शब्द की वह शक्ति जिसमें रूढ़ि अथवा प्रयोजनवश शब्द का मुख्यार्थ बाधित होता है किन्तु उसी से सम्बद्ध अन्य अर्थ प्रकाशित होता है, लक्षणा कहलाती है।
– कुन्तक अभिधावादी आचार्य थे। इनकी एकमात्र रचना 'वक्रोक्ति जीवित' अधूरी ही उपलब्ध है।
– आनन्दवर्द्धन 'ध्वनि संप्रदाय' के प्रवर्तक आचार्य थे। इनकी कृति 'ध्वन्यालोक' प्रसिद्ध है।

43. 'मूलन ही की जहाँ अधोगति केशव गाइय।
होम हुतासन धूम नगर एकै मलिनाइय॥' –इन काव्य–पंक्तियों में अलंकार है–

(a) परिसंख्य
(b) असंगति
(c) प्रतीप
(d) विभावना

Ans. (a) : 'मूलन ही की जहाँ अधोगति केशव गाइय।
होम हुतासन धूम नगर एकै मलिनाइय।।'
इन काव्य पंक्तियों में परिसंख्य अलंकार है।

परिसंख्य अलंकार– अन्यत्र सम्भव वस्तु को निषेध करके एक स्थान विशेष पर उसके नियमन को परिसंख्य अलंकार कहा जाता है।

अथवा

किसी वस्तु के गुणादि को उस वस्तु के अन्य स्थानों से हटाकर एक ही स्थान पर प्रतिस्थापित कर देना परिसंख्य अलंकार है।

जयदेव कहते हैं–
'परिसंख्या निषिध्यैकमन्यस्मिन् वस्तुयंत्रणम् ।
–(चन्द्रालोक) से।

अर्थात् एक पदार्थ का एक स्थान से अन्य स्थान पर उसे स्थित दिखलाने में परिसंख्य है।

असंगति अलंकार– इसमें कारण का होना कहीं और कार्य का होना कहीं वर्णित होता है।

उदाहरण– पलनि पीक अंजन अधर, धरे महावर भाल।
आज मिले सु भली करी, भले बने ही लाल।

विभावना अलंकार– कारण और कार्य के सम्बन्ध में चमत्कारपूर्ण कल्पना अर्थात् कारण के अभाव में कार्य की उत्पत्ति का वर्णन, विभावना अलंकार है।
जैसे- ''बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।'
यहाँ कारण (पैर और काना) के अभाव में चलना और सुनना कहा गया है। अतः विभावना अलंकार है।

प्रतीप अलंकार–प्रतीप का अर्थ है–''उल्टा/विपरीत।
इस प्रकार जहाँ बड़े/उच्च को छोटा और छोटे/नीच को बड़ा बताया जाता है, अर्थात् जब उपमेय को उपमान और उपमान को उपमेय बना दिया जाता है, तब वहाँ प्रतीप अलंकार होता है। यह 'उपमा अलंकार' का उल्टा होता है क्योंकि इस अलंकार में उपमान को लज्जित, पराजित या नीचा दिखाया जाता है और उपमेय को श्रेष्ठ बताया जाता है।

उदाहरण : ''सिय मुख समता किमि करै चंद वापुरो रंक।''

44. दिवस का अवसान समीप था
गगन था कुछ लोहित हो चला
तरु शिखा पर थी अब राजती
कमलिनी–कुल–वल्लभ की प्रभा
इस कविता में छन्द है –

(a) वंशस्थ
(b) द्रुतविलम्बित
(c) दुर्मिल
(d) वसन्ततिलका

Ans. (b) :
। । । ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ
'दिवस का अवसान समीप था = 12 अक्षर
गगन था कुछ लोहित हो चला।
तरु शिखा पर थी अवराजती
कमलिनी कुल वल्लभ की प्रभा।
इस कविता में 'द्रुतविलम्बित' छंद है।

द्रुत विलम्बित– इसका दूसरा नाम 'सुन्दरी' भी है। इसमें 12 अक्षर इन गणों के क्रम में रहते हैं–
नगण, भगण, भगण, रगण।
सूत्र–[न भ भ र –द्रुत]

वंशस्थ– यह समवर्णिक छंद है, इसका पूरा नाम 'वंशस्थ विलम्' है। इसमें 12 वर्ण एवं जगण, तगण, जगण, रगण होता है।

।ऽ ।ऽऽ ।। ऽ। ऽ।ऽ
सगर्ण बोला तब कर्ण भूप से, = 12 वर्ण
अमान्य बोला तब कर्ण भूप से,
परास्त होना रण पूर्ण शत्रु से,
विचार्य है केवल बृद्ध बुद्धि से।
दुर्मिल छंद : दुर्मिल सवैया छंद का दूसरा नाम "चंद्रकला" है। दुर्मिल छंद के प्रत्येक चरण में 24 वर्ण होते है। इसमें 4 चरण होते हैं। दुर्मिल छंद में 12-12 वर्ण पर यति होती है। इसमें 8 सगण (।।ऽ) होते हैं।
उदाहरण :
"सखि नील-नभस्सर में उतरा, यह हंस अहा तरता तरता।
अब तारक-मौक्तिक शेष नहीं, निकला जिनको चरता चरता।
अपने हिम-बिन्दु बचे तब भी, चलता उनको धरता धरता।
गड़ जाय न कंटक भूतल के, कर डाल रहा डरता डरता।
वसंततिलका छंद–वसंततिलका एक वर्णिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 14 वर्ण होते है एवं 14वें वर्ण पर यति होती है। वसंततिलका छंद में तगण (ऽऽ।), भगण (ऽ।।), जगण (।ऽ।), जगण (।ऽ।) और 2 गुरू (ऽऽ) होता है।
"उक्ता वसंततिलका तभजाः जगौ गः।"
उदाहरण :
मै पुण्य भारत घरा पर जन्म लेऊँ।
संस्कार वैदिक मिले सब देव सेऊँ।।
यज्ञोपवीत रखके नित नेम पालूँ।
माथे लगा तिलक मैं रख गर्व चाखूँ।।

45. 'सगुन अलंकारन सहित दोषरहित जो होइ। शब्द अर्थ वारो कवित बिबुध कहत सब कोइ॥' – काव्य की यह परिभाषा इनमें से किस आचार्य ने दी है?
(a) कुलपति मिश्र
(b) भिखारीदास
(c) चिन्तामणि
(d) श्रीपति

Ans. (c) : 'सगुन अलंकारन सहित, दोषरहित जो होइ।
शब्द अर्थ वारो कवित बिबुध कहत सब कोइ।।"
काव्य की यह परिभाषा आचार्य चिन्तामणि ने दी है।
आचार्य चिन्तामणि ने काव्य का उक्त लक्षण अपने ग्रंथ 'कवि कुल कल्पतरु' में दिया है।

46. भरत के रस-सूत्र में निहित 'संयोग' का अर्थ 'भोज्य – भोजक भाव' निष्पत्ति' का अर्थ 'भुक्ति' (आस्वाद) की स्थापना किस व्याख्याकार ने की है?
(a) भट्ट लोल्लट
(b) श्री शंकुक
(c) अभिनवगुप्त
(d) भट्ट नायक

Ans. (d) : भरत के रस-सूत्र में निहित संयोग का अर्थ 'भोज्य–भोजक भाव' तथा 'निष्पत्ति' का अर्थ 'भुक्ति' (आस्वाद) की स्थापना व्याख्याकार **भट्ट नायक** ने की है। भरतमुनि के रस-सूत्र में आए संयोग एवं निष्पत्ति शब्द के अर्थ, रस की अवस्थिति के सम्बन्ध में परवर्ती आचार्यों का मत निम्न है–

आचार्य	**संयोग**	**निष्पत्ति**	**रस की अवस्थिति**
भट्ट लोल्लट	उत्पाद्य–उत्पादक सम्बन्ध	उत्पत्ति	अनुकार्य (राम) में
श्री शंकुक	अनुमाप्य–अनुमापक	अनुमिति	अनुकर्ता (नट) में
भट्ट नायक	भोज्य–भोजक	भुक्ति	प्रेक्षक (दर्शक) में
अभिनव गुप्त	व्यंग्य व्यंजक	अभिव्यक्ति	सामाजिक (सहृदय) में

रस को 'ब्रह्मानन्द सहोदर' सर्वप्रथम भट्टनायक ने कहा।

47. 'शब्दार्थो ते शरीरं रस आत्मा'– यह कथन इनमें से किसका है?
(a) भरतमुनि
(b) राजशेखर
(c) विश्वनाथ
(d) भामह

Ans. (b) : 'शब्दार्थो ते शरीरं आत्मा' यह कथन **राजशेखर** का है।
भामह ने काव्य की परिभाषा दी–
"शब्दार्थो सहितौ काव्यम्।"
आचार्य विश्वनाथ ने काव्य की परिभाषा दी–
"वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।"

48. उच्चारण–स्थान की दृष्टि से हिन्दी के 'अ' और 'आ' स्वर हैं–
(a) तालव्य
(b) मूर्धन्य
(c) ओष्ठ्य
(d) कण्ठ्य

Ans. (d) : उच्चारण स्थान की दृष्टि से हिन्दी के 'अ' और 'आ' 'कण्ठ्य' स्वर हैं।
कण्ठ्य – अ, आ, क ख ग घ ङ ह अः
तालव्य – इ ई च छ ज झ ञ य श
मूर्धन्य – ऋ ट ठ ड ढ ण र ष
दन्त्य – ल त थ द ध न स
ओष्ठ्य– उ ऊ प फ ब भ म
मूल स्वर– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ
संयुक्त स्वर– ए, ओ, ऐ, औ

49. केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने हिन्दी की मानक वर्णमाला में मूलतः कितनी स्वर और कितनी व्यंजन–ध्वनियों को स्थान दिया है?

(a) 12 और 36
(b) 12 और 35
(c) 11 और 35
(d) 11 और 36

Ans. (c) : केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने हिन्दी की मानक वर्णमाला में मूलतः 11 स्वर और 35 व्यंजन-ध्वनियों को स्थान दिया है।
वर्ण भाषा की ध्वनियों के उच्चरित तथा लिखित दोनों रूपों के प्रतीक हैं। लिपि-चिह्न भाषा के लिखित रूप के प्रतीक होते हैं। इस दृष्टि से लिपि-चिह्न वर्ण के अंतर्गत आते हैं। इन वर्णों के क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं।
'केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय' द्वारा विद्वानों के विचार-विमर्श के पश्चात् हिन्दी वर्णमाला तथा अंकों का अद्यतन मानव स्वरूप निर्धारित किया गया है जो इस प्रकार है–
स्वर– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
संस्कृत के लिए प्रयुक्त देवनागरी में ॠ, ऌ तथा ॡ भी सम्मिलित है, किन्तु हिन्दी में इनका प्रयोग न होने के कारण इन्हें हिन्दी की मानक वर्णमाला में स्थान नहीं दिया गया है।

50. 'अचार' शब्द इनमें से किस भाषा से आया है?

(a) अंग्रेजी
(b) पुर्तगाली
(c) फ्रेंच
(d) डच

Ans. (b) : 'अचार' शब्द पुर्तगाली भाषा से आया है।
अन्य पुर्तगाली शब्द– तम्बाकू, अनन्नास, आलपीन, आलमारी, काजू, किरानी, गमला, परात, पिस्तौल, पपीता, कमीज, कमरा, तौलिया, बाल्टी, चाबी, गोभी, इस्पात।
अंग्रेजी शब्द– कोर्ट, डाक्टर, नर्स, पेन्सिल, स्कूल, कालेज, मजिस्ट्रेट, आपरेशन, टेलीफोन, टिकट, कालरा, वोट।
डच शब्द– तुरूप, बम (टाँगे का)
फ्रेंच शब्द– कारतूस, रिपोर्ताज, अँग्रेज, कूपन, फ्रांसीसी, पुलिस।

51. 'पश्चिमी हिन्दी' की उत्पत्ति इनमें से किस अपभ्रंश से हुई है?

(a) शौरसेनी
(b) पैशाची
(c) मागधी
(d) अर्द्धमागधी

Ans. (a) : 'पश्चिमी हिन्दी' की उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश से हुई है।
भोलानाथ तिवारी ने क्षेत्रीय तथा सम्बद्ध अपभ्रंशों के आधार पर अपना वर्गीकरण निम्न ढंग से प्रस्तुत किया है–

अपभ्रंश		आधुनिक भाषाएँ
शौरसेनी (मध्यवर्ती)	–	पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी, गुजराती।
मागधी (पूर्वीय)	–	बिहारी, बंगाली, उड़िया, असमिया।
अर्धमागधी (मध्य पूर्वीय)	–	पूर्वी हिन्दी
महाराष्ट्री (दक्षिणी)	–	मराठी
ब्राचड़	–	सिन्धी
पैशाची (पश्चिमोत्तरी)	–	लँहदा, पंजाबी

52. ''एक भाषा के अन्तर्गत जब कई अलग-अलग रूप विकसित हो जाते हैं, तो उन्हें 'बोली' कहते हैं।'' –यह कथन किसका है?

(a) जॉर्ज ग्रियर्सन
(b) डॉ0 श्यामसुन्दर दास
(c) आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा
(d) डॉ0 भोलानाथ तिवारी

Ans. (d) : ''एक भाषा के अन्तर्गत जब कई अलग-अलग रूप विकसित हो जाते हैं, तो उन्हें 'बोली' कहते हैं। यह कथन डॉ0 भोलानाथ तिवारी का है।
किसी सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली स्थानीय भाषा को बोली कहते हैं। **जैसे–** अवधी, ब्रजभाषा, मगही, बुन्देली आदि। राष्ट्रीय भाषा किसी राष्ट्र की भाषा होती है जबकि राजभाषा द्वारा सरकार तथा सरकारी कार्यालयों में कार्य किया जाता है।
डॉ0 श्यामसुन्दर दास के अनुसार– ''मनुष्य और मनुष्यों के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने के लिए व्यक्त संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं।

53. निम्नलिखित में से पूर्वी हिन्दी की बोली नहीं है–

(a) अवधी
(b) बघेली
(c) ब्रजभाषा
(d) छत्तीसगढ़ी

Ans. (c) : निम्न में से पूर्वी हिन्दी की बोली ब्रजभाषा नहीं है 'ब्रजभाषा' पश्चिमी हिन्दी की बोली है।

अपभ्रंश	आधुनिक भाषाएँ	बोलियाँ
शौरसेनी	पश्चिमी हिन्दी	ब्रजभाषा, बुंदेली, कन्नौजी, कौरवी या खड़ी बोली, बाँगरू या हरियाणवी।
	राजस्थानी हिन्दी	मारवाड़ी, जयपुरी, मेवाती, मालवी।
मागधी	बिहारी	भोजपुरी, मगही, मैथिली
अर्द्धमागधी	पूर्वी हिन्दी	अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
महाराष्ट्री	मराठी	कोंकणी, नागपुरी, कोष्ठी, महारी
पैशाची	ब्राचड़–1. सिंधी 2. पंजाबी	

54. ''तुम वहन कर सको जन – मन में मेरे विचार, वाणी मेरी, चाहिए तुम्हें क्या अलंकार।'' –ये पंक्तियाँ सुमित्रानंदन पन्त की किस कृति से उद्धृत की गयी हैं?

(a) युगांत
(b) ग्राम्या
(c) गुंजन
(d) स्वर्णधूलि

Ans. (b) : ''तुम वहन कर सको जन-मन में मेरे विचार,
वाणी मेरी, चाहिए तुम्हें क्या अलंकार।'' ये पंक्तियाँ सुमित्रानंदन पंत की 'ग्राम्या' कृति से उद्धृत की गयी हैं।
सुमित्रानन्दन पंत के काव्य को विद्वानों ने चार चरणों में बाँटा है जो निम्न है–
छायावादी– उच्छ्वास (1920 ई.), ग्रंथि (1920 ई.), वीणा (1927 ई.), पल्लव (1928 ई.), गुंजन (1932 ई.)।
प्रगतिवादी– युगान्त (1936 ई.), युगवाणी (1939 ई.), ग्राम्या (1940 ई.)।
अन्तश्चेतनावादी– उत्तरा (1949 ई.), स्वर्ण किरण (1947 ई.), स्वर्ण धूलि (1947 ई.), युगपथ (1949 ई.)।
नवमानवतावादी– कला और बूढ़ा चाँद (1959 ई.), अतिमा (1955 ई.), लोकायतन (1964 ई.), चिदम्बरा (1958), सत्यकाम (1975)।

55. इनमें से संस्कृत भाषा की दृष्टि से कौन सा शब्द-समूह शुद्ध है?

(a) विद्युत, परिषद्, विद्वान, पृथक
(b) विद्युत, परिषद्, विद्वान्, पृथक्
(c) विद्युत्, परिषद्, विद्वान्, पृथक
(d) विद्युत्, परिषद्, विद्वान्, पृथक्

Ans. (d) : संस्कृत भाषा की दृष्टि से शुद्ध शब्द समूह है–
विद्युत्, परिषद्, विद्वान्, पृथक् ।

56. 'यशोदा' शब्द में कौन-सी संधि है?

(a) विसर्ग सन्धि
(b) गुण सन्धि
(c) यण सन्धि
(d) व्यंजन सन्धि

Ans. (a) : 'यशोदा' में विसर्ग सन्धि है। इसका सन्धि-विच्छेद यशः+दा = यशोदा होगा। विसर्ग तथा व्यंजन या स्वर के परस्पर मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे विसर्ग संधि कहते हैं। यदि प्रथम पद के अंत में 'अ' स्वर के बाद विसर्ग आये तथा दूसरे पद के प्रारंभ में किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण आये या य, र, ल, व, ह रहे तो विसर्ग के स्थान पर 'उ' हो जाता है और यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर गुण सन्धि द्वारा 'ओ' हो जाता है। **जैसे–** सरः + वर = सरोवर

57. 'मुट्ठी गरम करना' मुहावरे का सही अर्थ है–

(a) आग से तापना
(b) बहुत अधिक पीटना
(c) घूस देना
(d) बहुत सस्ता होना

Ans. (c) : 'मुट्ठी गरम करना' मुहावरे का सही अर्थ है– घूस देना।
मुहावरा– ऐसा वाक्यांश जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराये, 'मुहावरा' कहलाता है।
(डॉ0 वासुदेवनन्दन प्रसाद)
''मुहावरा भाषा विशेष में प्रचलित उस अभिव्यक्त इकाई को कहते हैं जिसका प्रयोग प्रत्यक्षार्थ से अलग रूढ़ि लक्ष्यार्थ के लिए किया जाता है।'' –(डॉ0 भोलानाथ तिवारी)

मुहावरा		**अर्थ**
बरस पड़ना	–	अति क्रुद्ध होकर डाँटना
आग में घी डालना	–	क्रोध भड़काना/उकसाना
अण्डे सेना	–	घर में बेकार बैठना
गुदड़ी का लाल	–	साधारण वस्तु में अनमोल पदार्थ का छिपा रहना
घड़ो पानी पड़ना	–	अत्यन्त लज्जित होना

58. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य है–

(a) यह असली गाय का घी है।
(b) यहाँ शत्रु से खतरा है।
(c) अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा पकड़ा गया।
(d) इस प्रकार यहाँ अनेक प्रकार के आविष्कार हुए।

Ans. (b) : निम्न में से शुद्ध वाक्य है–
यहाँ शत्रु से खतरा है।
शेष अन्य वाक्य अशुद्ध है जैसे–
–यह असली गाय का घी है। –अशुद्ध
–यह गाय का असली घी है। –शुद्ध

59. 'मैंने आम खाया है।' –यह वाक्य किस काल को प्रदर्शित करता है?

(a) भूतकाल
(b) वर्तमान काल
(c) भविष्य काल
(d) इनमें से किसी को नहीं

Ans. (a) : 'मैने आम खाया है।' यह वाक्य भूतकाल को प्रदर्शित करता है। यह आसन्न भूतकाल का उदाहरण है। क्रिया के उस रूपान्तरण को 'काल' कहते हैं, जिससे उसके कार्य व्यापार का समय और उसकी पूर्णता का बोध हो। काल तीन प्रकार के होते हैं–

काल
→ वर्तमान काल
→ भूत काल
→ भविष्य काल

1. वर्तमान काल– क्रियाओं के व्यापार की निरन्तरता को 'वर्तमान काल' कहते हैं। इसमें क्रिया का आरम्भ हो चुका होता है। जैसे–वह पढ़ती है। यहाँ 'पढ़ने' का कार्य व्यापार चल रहा है, समाप्त नहीं हुआ।

वर्तमान काल के पाँच भेद होते हैं–

वर्तमान काल
- सामान्य वर्तमान काल
- तात्कालिक वर्तमान काल
- पूर्ण वर्तमान काल
- संदिग्ध वर्तमान काल
- सम्भाव्य वर्तमान काल

2. भूत काल– जिस क्रिया से कार्य की समाप्ति का बोध हो, उसे भूतकाल की क्रिया कहते हैं, जैसे– कुसुम घर गयी। इसके 6 भेद होते हैं।

भूतकाल के भेदः

सामान्य भूतकाल, आसन्न भूतकाल, पूर्ण भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, संदिग्ध भूतकाल, हेतु-हेतुमद भूतकाल।

3. भविष्य काल– क्रिया का वह रूप जिससे आने वाले समय में कार्य के होने का बोध हो, भविष्य काल कहलाता है।

भविष्य काल के तीन भेद होते हैं–

भविष्य काल
- सामान्य भविष्य
- सम्भाव्य भविष्य
- हेतु हेतु मद् भविष्य

60. निम्नलिखित में से किस शब्द में उपसर्ग नहीं लगा है?

(a) नपुंसक
(b) समालोचना
(c) अतिशय
(d) दर्शन

Ans. (d) : निम्न में दर्शन शब्द में उपसर्ग नहीं लगा है। शेष विकल्पों में उपसर्ग लगा है।

उपसर्ग (Prefixes)– 'उपसर्ग' उस शब्दांश या अव्यय को कहते हैं, जो किसी शब्द के पहले आकर उसका विशेष अर्थ प्रकट करता है।

उपसर्ग = उप (समीप) + सर्ग (सृष्टि करना) का अर्थ है– किसी शब्द के समीप आकर नया शब्द बनाना।

संस्कृत, हिन्दी और उर्दू भाषा से प्राप्त उपसर्गों की संख्या इस तरह निश्चित की गई है–

संस्कृत उपसर्ग –19, हिन्दी उपसर्ग –10, उर्दू उपसर्ग –12

अतिशय में 'अति' उपसर्ग है। समालोचना में 'सम्' उपसर्ग है। नपुंसक में 'न' उपसर्ग है।

61. इनमें से व्यक्तिवाचक संज्ञा नहीं है–

(a) त्रिपिटक
(b) भारत
(c) लेखक
(d) गंगा

Ans. (c) : इनमें से 'लेखक' व्यक्तिवाचक संज्ञा नहीं है। बल्कि जातिवाचक संज्ञा है। त्रिपिटक, भारत, गंगा ये सभी व्यक्तिवाचक संज्ञा है।

संज्ञा– किसी जाति, द्रव्य, गुण, भाव, व्यक्ति, स्थान और क्रिया आदि के नाम को संज्ञा कहते है।

व्यक्तिवाचक संज्ञा– जिस शब्द से किसी एक ही व्यक्ति या वस्तु का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक 'संज्ञा' कहते है। जैसे– राम, काशी, त्रिपिटक, भारत, गंगा, लखनऊ, संध्या, प्रशांत महासागर, हिमालय, रक्षाबंधन, भारतीय, दीवाली, अमेरिकी, पानीपत की पहली लड़ाई इत्यादि।

जातिवाचक संज्ञा– जिस संज्ञा से किसी जाति के सम्पूर्ण पदार्थों व उनके समूहों का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे– मनुष्य, नदी, लेखक, पहाड़, सभा, गाय, तोता, भूकम्प, वर्षा, तूफान, प्रोफेसर, कुर्सी, मकान, घड़ी, टेबल इत्यादि।

62. 'पंडित' का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

(a) कोविद
(b) दामिनी
(c) बुध
(d) प्राज्ञ

Ans. (b) : 'पंडित' का पर्यायवाची शब्द 'दामिनी' नहीं है। अपितु 'दामिनी' बिजली का पर्यायवाची शब्द है।

बिजली के अन्य पर्यायवाची शब्द– चपला, विद्युत, छटा, चम्पा, अशिन, चंचला, सौदामिनी, तड़ित, दामिनी, घनवल्ली, बीजुरी, क्षणप्रभा, कांचनवली।

पण्डित के पर्यायवाची शब्द– विद्वान, विचरण, कोविद, बुध, प्राज्ञ, सुधी, कोविद, सुविज्ञ, ज्ञानी, धीर, मनीषी।

63. निम्नलिखित में से सामासिक शब्द और समास के नाम का एक युग्म गलत है, वह है–

(a) उपकृष्णम् – तत्पुरुष
(b) महादेव – कर्मधारय
(c) पुष्पधन्वा – बहुब्रीहि
(d) शुकबकम् – द्वन्द्व

Ans. (a) : निम्न में से सामासिक शब्द और समास के नाम का एक युग्म गलत है, वह है– उपकृष्णम् – तत्पुरुष। उपकृष्णम् में 'अव्ययीभाव समास' है। इसका समास विग्रह–कृष्णस्य समीपम् = उपकृष्णम् (समीप अर्थ में 'उप' अव्यय)

–अव्ययीभाव समास में प्रथम पद अव्यय एवं पूर्व पद की प्रधानता होती है और समस्त पद अव्यय की भाँति कार्य करता है। इस समास का पहला पद-आ, अनु, यथा, प्रति, भर, उप, यावत आदि से प्रारम्भ होता है। जैसे–यथाशक्ति, प्रतिदिन, उपगंगम्, उपकृष्णम्, भरपेट। शेष अन्य विकल्प महादेव- कर्मधारय, पुष्पधन्वा–बहुब्रीहि, शुकबकम् –द्वन्द्व समास होगा।

सामासिक शब्द	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
पुष्पधन्वा	वह जिसके पुष्पों का धनुष है, (कामदेव)	बहुब्रीहि
महादेव	महान हैं जो देव	कर्मधारय
शुवबकम्	शुक च बकम च	द्वन्द्व